Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

License Information

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

HAG

हाग्गै

हाग्गै

बाबेल में बँधुआई से इब्री लोगों के यहूदा देश में लौटने के लगभग बीस साल बाद भी मंदिर खंडहर में पड़ा था। फिर भी यहूदा के लोग खुद आरामदायक घरों में रह रहे थे। निश्चय ही परमेश्वर का घर इससे बेहतर का हकदार था! हाग्गै ने इस विसंगति को इंगित किया और लोगों को प्रभु के मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए सफलतापूर्वक प्रेरित किया। हाग्गै ने इस्राएल को एक नया दृष्टिकोण दिया कि कैसे उनके प्रयास परमेश्वर की अपने लोगों के लिए योजना की सेवा करेंगे।

पृष्ठभूमि

ईसा पूर्व 538 में कुस्रू महान, फारस के राजा, ने एक आदेश जारी किया जिससे बाबेल के लोगों द्वारा निर्वासित किए गए विजित लोगों को अपने देश लौटने की अनुमति मिली (देखें एज्रा 1:1–11)। यरूशलेम लौटने वाले पहले प्रवासियों का नेतृत्व शेशबस्सर ने किया, जो पुनर्स्थापित समाज का पहला राज्यपाल था (एज्रा 1:5–11)। अपनी उत्सुकता में, लौटे हुए निर्वासितों ने जल्द ही वेदी और मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू कर दिया (एज्रा 3:1–13), लेकिन स्थानीय अन्यजाति निवासियों ने इस्राएलियों को धमकाया और उन्हें उनके परमेश्वर-प्रदत्त कार्य से हतोत्साहित किया (एज्रा 4:4–24)। उनके लौटने के बाद निर्माण स्थल लगभग बीस वर्षों तक उपेक्षित पड़ा रहा।

इस अवधि के दौरान इब्री लोग उदास थे। स्वार्थ ने समाज की आत्मा को अपंग कर दिया था, और उदासीनता और मोहभंग ने उनकी आराधना से ध्यान हटा दिया था। यहूदी निर्वासितों का केवल एक छोटा प्रतिशत ही वास्तव में यहूदा में वापस लौटा था, शहर की दीवारें अभी भी खंडहर में पड़ी थीं, परमेश्वर का मंदिर मलबे का ढेर था, और सूखे और विपत्ति ने देश को तबाह कर दिया था। यहूदा एक फारसी अधीन राज्य के रूप में कष्ट सहता रहा, जबकि आसपास के राष्ट्रों ने यरूशलेम के नेतृत्व को परेशान किया और उनके सुधार के प्रयासों को विफल कर दिया।

जब हाग्गै ने ईसा पूर्व 520 में प्रचार करना शुरू किया, तो एक गंभीर सूखा भूमि को प्रभावित कर रहा था (हाग् 1:11)। परमेश्वर ने उन्हें इस्राएलियों को परमेश्वर के मन्दिर का पुनर्निर्माण करने और यरूशलेम के लोगों के आत्मिक नवीनीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए भेजा। इसके जवाब में, लोगों ने पुनर्निर्माण फिर से शुरू किया (1:14), और यह परियोजना ईसा पूर्व 515 मार्च में पूरी हुई (देखें एज्रा 6:15)।

सारांश

हाग्गै के चार संदेशों में से प्रत्येक एक अलग धर्मशास्त्रीय चिंता को उजागर करता है। पहला उपदेश (अध्याय 1) यहूदियों को चुनौती देता है कि वे अपने व्यक्तिगत आराम को पहली प्राथमिकता देना बंद करें और परमेश्वर के मन्दिर का पुनर्निर्माण करके उनकी उचित आराधना को पुनर्स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित करें।

दूसरा संदेश (2:1–9) समाज को यह आश्वासन देता है कि परमेश्वर ने आशीष और पुनःस्थापन के वादों को नहीं भुलाया है जो पहले के भविष्यवक्ताओं द्वारा किए गए थे। प्रभु की महिमा एक बार फिर मंदिर को भर देगी (2:7)। यह कोई खाली शब्द नहीं थे जो एक संकटग्रस्त अवशेष को सहारा देने के लिए कहे गए हों, बल्कि परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए उनके वादे के निश्चित शब्द थे।

तीसरे संदेश (2:10–19) का मुख्य विषय अनुष्ठानिक पवित्रता है। हाग्गै ने अपने श्रोताओं को याद दिलाया कि व्यवस्था के निर्देश अब भी प्रभावी हैं। परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करते हैं कि वे पवित्र हों, जैसे वह पवित्र हैं (देखें लैव्य 11:44–45)।

हाग्गै का अंतिम और शायद सबसे महत्वपूर्ण संदेश (हाग् 2:20–23) इस्राएल के धार्मिक और राजनीतिक जीवन में राजा दाऊद के वंशजों की प्रमुखता को पुनःस्थापित करना है। दाऊद का वंश बाबेली बँधुआई के बाद इब्री लोगों के पुनःस्थापन के लिए महत्वपूर्ण था (देखें यिर्म 23:5; 33:15; यहे 37:24)। जरुब्बाबेल राजा दाऊद का वंशज था; प्रभु की "मुहर वाली अंगूठी" के रूप में सेवा करने के उसके आदेश ने इस्राएल की परमेश्वर द्वारा पुनर्स्थापना की शुरुआत को चिह्नित किया (हाग् 2:23; तुलना करें यिर्म 22:24) और इसने यीशु मसीह की ओर भी संकेत किया है, जो दाऊद के वंशज हैं (मत्ती 1:1) और जो धार्मिकता में सदा के लिए शासन करेंगे।

लेखक

हाग्गै की पुस्तक अपने लेखक के बारे में मौन है, लेकिन यह संभव है कि हाग्गै ने अपने उपदेश स्वयं लिखे हों (1:1, 3)। बाइबल भविष्यद्वक्ता हाग्गै के बारे में कोई जीवनी जानकारी दर्ज नहीं करती है, लेकिन उनकी सेवकाई की पुष्टि एज्रा 6:14 द्वारा की गई है। हाग्गै ने संभवतः अपने उपदेश देने (ईसा पूर्व 520) और मंदिर के पूर्ण होने (ईसा पूर्व 515) के बीच में कभी अपनी पुस्तक लिखी होगी, एक घटना जिसका भविष्यवाणी में उल्लेख नहीं है।

तिथि

हाग्गै ने अपने संदेश ईसा पूर्व 520 अगस्त और दिसंबर के बीच दिए, जो दारा I, फारस के राजा के शासन का दूसरा वर्ष था (देखें हाग् 1:1, 15; 2:1, 10)। निर्वासन के बाद यहूदिया में हाग्गै की सेवकाई जकर्याह की सेवकाई से मेल खाती थी, जिसने उसी वर्ष नवंबर में यरूशलेम में प्रचार करना शुरू किया था (देखें जक 1:1)।

साहित्यिक शैली

हालांकि हाग्गै यशायाह या यिर्मयाह की पुस्तकों की तरह एक महान कृति नहीं है, फिर भी इसमें साहित्यिक विशेषताएँ हैं। हाग्गै विशेष रूप से अपने चार संदेशों में से तीन में अपने सिद्धांत पर जोर देने के लिए अलंकारिक प्रश्नों का उपयोग करते हैं (देखें 1:4; 2:3, 19)। वह अपने उपदेशों और उसके माहौल बनाने के लिए शब्दों या वाक्यांशों को दोहराता है (उदाहरण के लिए, बार-बार दोहराया गया "सोच-विचार करो," 1:5, 7; 2:15), और कभी-कभी शब्दों के खेल में भी संलग्न होते हैं (उदाहरण के लिए, इब्री खारेब, "उजाड़" [1:4] और खोरब, "अकाल" [1:11])।

हाग्गै के लिखित संदेश संभवतः अधिक लंबे उपदेशों का सारांश हैं। यह संदेश *दिव्यवाणीयाँ* हैं —परमेश्वर द्वारा प्रेरित आधिकारिक संदेश। दिव्यवाणियों में अक्सर सूत्रात्मक अभिव्यक्तियाँ होती हैं जो सामान्य शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग करती हैं। हाग्गै में इनमें से कई सूत्र मिलते हैं: "तारीख" सूत्र (जैसे, "राजा दारा के शासन का दूसरा वर्ष," 1:1; 2:1, 10, 20), "संदेश" सूत्र ("यहोवा का यह वचन पहुँचा," 1:1; 2:1, 10, 20), "परमेश्वर-के-भाषणकर्ता" सूत्र ("यहोवा यह कहते हैं," 1:7, 13; 2:4), और "वाचा संबंध" सूत्र ("मैं तुम्हारे संग हूँ," 2:4–5)।

अर्थ और संदेश

हाग्गै के चार संक्षिप्त उपदेशों ने एक ऐसे समाज को जागने का आह्वान किया जो आत्मिक रूप से सोया हुआ था। उनका संदेश था, यरूशलेम में प्रभु के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए "उठो और काम पर लग जाओ" ।

हाग्गै ने समाज की कृषि और आर्थिक सफलता की कमी को प्रभु के मंदिर की उपेक्षा से जोड़ा। उन्होंने परमेश्वर की आराधना में लोगों की अरुचि के लिए उन्हें फटकार लगाई और उन्हें पश्चाताप और आत्मिक नवीनीकरण के लिए बुलाया। जब लोगों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और पुनर्निर्माण का कार्य आरंभ किया, तो हाग्गै ने परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति और सहायता के वादे से उन्हें प्रोत्साहित किया।

हाग्गै ने यरूशलेम के लोगों को सच्ची आराधना, परमेश्वर के वचन पर भरोसा, व्यक्तिगत पवित्रता और ईश्वरीय रूप से नियुक्त नेतृत्व के प्रति आज्ञाकारिता का आह्वान किया। हाग्गै परमेश्वर की आत्मा की स्थायी उपस्थिति पर जोर देते हैं (1:13–14; 2:4–5), जो उनके समकालीन जकर्याह के साथ साझा किया गया एक विषयवस्तु है (जक 1:16; 8:23; यह भी देखें यहे 37:27–28)।